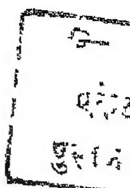
लिंकन-





लिंकन-वाणी

एब्राहम लिंकन के भाषणों, लेखों और उक्तियों का संकलन

मूल सन्दर्भों से
सच्चिदानन्द वात्स्यायन
द्वारा अनुवादित

प्रकाशक
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस),
प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

१९५९

मूल्य २·७५ नये पैसे

Published with the Co-operation of the United States Information Service.

Price Rs. 2·75 nP.

Published by
B. N. Mathur at the Indian Press (Pubs.) Private Ltd., Allahabad.
AND
Printed by P. L. Yadava at the Indian Press Private Ltd., Allahabad.

क्रम-सूची

श्रद्धांजलि .. ३
जवाहरलाल नेहरू

जीवनी

युग-युग की सम्पत्ति .. ५
(लिंकन की जीवनी) पाल एम० एंगल

लिंकन : रूप-वर्णन .. ३७
विलियम हर्नडन

एक संक्षिप्त आत्म-परिचय .. ४०

संघ के विषय में

अमेरिका .. ४३
(स्प्रिंगफील्ड, २७ जनवरी १८३७)

घर की फूट .. ४४
(१६ जून १८५८)

युद्ध : कांग्रेस को सन्देश : .. ४९
(वाशिंगटन, ४ जुलाई १८६१)

संघ की रक्षा .. ५०
(होरेस ग्रीली को पत्र, २२ अगस्त १८६१)

दास-स्वामियों की क्षति-पूर्ति .. ५३
(कांग्रेस को दूसरा वार्षिक सन्देश, वाशिंगटन, दि० १८६२)

उद्देश्य : राष्ट्रीय शासन की प्रतिष्ठा .. ५५
(फिलाडेलफिया, १६ जून १८६४)

दूसरा समारम्भ भाषण .. ५६
(वाशिंगटन, ४ मार्च १८६५)

पुनर्निर्माण के विषय में .. ५९
(वाशिंगटन, ११ अप्रैल १८६५)

जीवन के अन्तिम दिन की एक बात .. ६१
(जनरल वान एलन को पत्र १४ अप्रैल १८६५)

दासता के विषय में

दास बनाने का 'अधिकार' .. ६२
(१ जुलाई १८५४)

दासता पर प्रथम भाषण .. ६३
(पियोरिया, इलिनाय, १६ अक्टूबर १८५४)

दासता के सम्बन्ध में—एक मित्र को .. ६५
(स्पीड के नाम पत्र, २४ अगस्त १८५५)

दास-प्रथा विषयक विचारों की व्याख्या .. ६८
(शिकागो, १० जुलाई १८५८)

दास-प्रथा पर एक प्रसिद्ध अधूरा लेख : .. ७०
(अगस्त १८५८)

दासता : आपसी फूट का स्थायी कारण .. ७१
(ओटावा, २१ अगस्त १८५८)

परस्परता .. ७१
(पियर्स आदि के नाम पत्र, स्प्रिंगफील्ड ६ अप्रैल १८५९)

वैमनस्य का कारण .. ७२
(कोलम्बस, ओहायो, १६ सितम्बर १८५९)

दास-प्रथा और लोक-मंगल .. ७२
(सिनसिनाटी, १७ सितम्बर १८५९)

कूपर संस्थान का भाषण .. ७३
(२७ फरवरी १८६०)

दो करोड़ डालर का परदा .. ७५
(न्यू हेवन, कनेक्टिकट, ६ मार्च १८६०)

दासों की मुक्ति .. ७५

दास-मुक्ति की प्रथम घोषणा .. ७७
(२२ सितम्बर १८६२)

दास-मुक्ति की अन्तिम घोषणा .. ७९
(१ जनवरी १८६३)

एक महत्त्वपूर्ण पत्र .. ८०
(हाजेज के नाम पत्र, ४ अप्रैल १८६४)

दास कौन हो ? .. ८४
(इंडियाना रेजिमेंट का भाषण, १७ मार्च १८६५)

स्व-शासन के विषय में

स्वशासन का अधिकार .. ८५
(पियोरिया, इलिनाय, १६ अक्टूबर १८५४)

बुलेट और बैलट : एक विस्मृत भाषण .. ८७
(ब्लूमिंगटन, इलिनाय, २९ मई १८५६)

स्व-शासन-सिद्धान्त .. ८८
(१ अक्टूबर १८५८)

राज्यों के अधिकार .. ८९
(डफ ग्रीन के नाम पत्र, २४ दिसम्बर १८६०)

प्रथम समारम्भ भाषण .. ९०
(वाशिंगटन, ४ मार्च १८६१)

गेटिसबर्ग का भाषण .. ९२
(१९ नवम्बर १८६३)

सैनिकों से .. ९३
(अगस्त १८६४)

अधिक से अधिक स्वतन्त्रता .. ९४
(ओहायो रेजिमेंट को भाषण, ३१ अगस्त १८६४)

स्वतन्त्र निर्वाचन . ९५
(वाशिंगटन, नवम्बर १८६४)

स्वाधीनता के विषय में

हंगरी से सहानुभूति .. ९८
(प्रस्ताव, १६ सितम्बर १८४९)

परस्पर अहस्तक्षेप .. ९९
(प्रस्ताव, ९ जनवरी १८५२)

स्वाधीनता की रक्षा .. १००
(पियोरिया, १६ अक्टूबर १८५४)

स्वाधीनता का तत्त्व .. १०१
(एडवर्ड्सविल इलिनाय, १३ सितम्बर १८५८)

शासन का दर्शन .. १०२
(१८६०)
स्वातन्त्र्य भवन का भाषण .. १०३
(फिलाडेल्फिया, २२ फरवरी १८६१)
मत और आचरण .. १०५
(पेनसिल्वानिया प्रतिनिधि-मंडल को, ५ मार्च १८६१)
स्वाधीनता पर विचार .. १०५
(बाल्टिमोर, १८ अप्रैल १८६४)

समानता के विषय में

सच्चा लोकतन्त्र .. १०७
(सिनसिनाटी, ६ मई १८४२)
प्रजातन्त्र का केन्द्रीय विचार .. १०७
(शिकागो, १० दिसम्बर १८५६)
मानव-मात्र की समता पर .. १०८
(स्प्रिंगफील्ड, २७ जून १८५७)
स्वाधीनता की ज्योति .. ११०
(शिकागो, १० जुलाई १८५८)
सत्य, न्याय और करुणा .. १११
(बेयर्ड्सटाउन, १२ अगस्त १८५८)

धर्म के विषय में

धार्मिक विचार .. ११३
(३१ जुलाई १८४८)
दासता-समर्थक धर्म-दर्शन .. ११४
(सितम्बर १८५८)
विदा-भाषण : स्प्रिंगफील्ड .. ११६
(११ फरवरी १८६१)
प्रार्थना-दिवस की घोषणा .. ११७
(१२ अगस्त १८६३)
ईश्वर की इच्छा पर .. ११९
(सितम्बर १८६२)

धन्यवाद-दिवस की घोषणा .. १२०
(३ अक्टूबर १८६३)
ईश्वरीय दिग्दर्शन .. १२२
(पत्र, ४ सितम्बर १८६४)
एक माता को पत्र .. १२३
(२१ नवम्बर १८६४)
संवाद-लेखक लिंकन .. ११५
(दिसम्बर १८६४)

शिक्षा के विषय में

प्रथम सार्वजनिक भाषण .. १२६
(न्यू सलेम, ९ मार्च १८३२)
मानसिक दासता .. १२८
(भाषण से, स्प्रिंगफील्ड, २२ फरवरी १८५९)
लेखन का आविष्कार .. १२८
(भाषण से, स्प्रिंगफील्ड, २२ फरवरी १८५९)
कृषि के विषय में .. १२९
(मैंडिसन, विस्कांसिन, ३० सितम्बर १८५९)

राजनीति के विषय में

जनता के प्रति उत्तरदायित्व .. १३३
(कर्नल रावर्ट को पत्र, २१ जून १८३६)
राजनीतिक प्रश्नों पर .. १३४
(स्प्रिंगफील्ड, दिसम्बर १८३९)
युवकों के लिए .. १३६
(हर्नडन को पत्र, २२ जून १८४८)
महत्त्वाकांक्षा और सेवा .. १३७
(१ अक्टूबर १८५८)
दलों का कलह .. १३८
(आल्टन में भाषण, १५ अक्टूबर १८५८)
नामजदगी की स्वीकृति .. १३८
(पत्र स्प्रिंगफील्ड, २३ मई १८६०)

एक सिफारिश का उत्तर .. १३९
(१८६१)
सरकारी नौकरी .. १४०
(वाशिंगटन, १८६२)
झगड़ा मत करो .. १४१
(पत्र, वाशिंगटन, २६ अक्टूबर १८६३)
युद्ध के बाद .. १४२
(२१ नवम्बर १८६४)

<u>विविध</u>

एक सम्बन्धी को परामर्श .. १४३
(१८४८)
एक युवक को परामर्श .. १४५
(५ नवम्बर १८५५)
राष्ट्रपतित्व के विषय में एक पत्र .. १४६
(१६ अप्रैल, १८५९)
पूंजी और श्रम के विषय में .. १४७
(दिसम्बर १८६१)
एक सेनापति के नाम पत्र .. १४९
(२६ जनवरी १८६३)
लिंकन की मानवीय करुणा .. १५१
(पत्र, १ मार्च, १८६४)
अन्तिम सार्वजनिक उक्ति .. १५१
(१४ अप्रैल १८६५)
ओ नाविक! मेरे महानाविक! .. १५३
(वाल्ट व्हिटमैन)
जीवन-तथ्य .. १५५
ग्रन्थ-सूची .. १६१

एब्राहम लिंकन की वाणी

'बिना किसी के प्रति द्वेष के, और सबके प्रति सद्भाव के साथ, ईश्वर ने सत्य जैसा हमें दिखाया है उसी सत्य पर दृढ़ रहकर, हम प्रयत्न करें कि जिस काम में हम लगे हैं वह पूरा हो, देश के घाव भरें, युद्ध का अभिशाप जिसने झेला उसकी, उसकी विधवा स्त्री की और अनाथ बच्चे की रक्षा हो, और वे सब कार्य सम्पन्न हों जिनसे हमारे अपने बीच में, एवं हमारे और अन्य राष्ट्रों के बीच में, न्यायोचित और स्थायी शान्ति स्थापित हो।'

—एब्राहम लिंकन
४ मार्च १८६५

By the President of the United States of America:

A Proclamation.

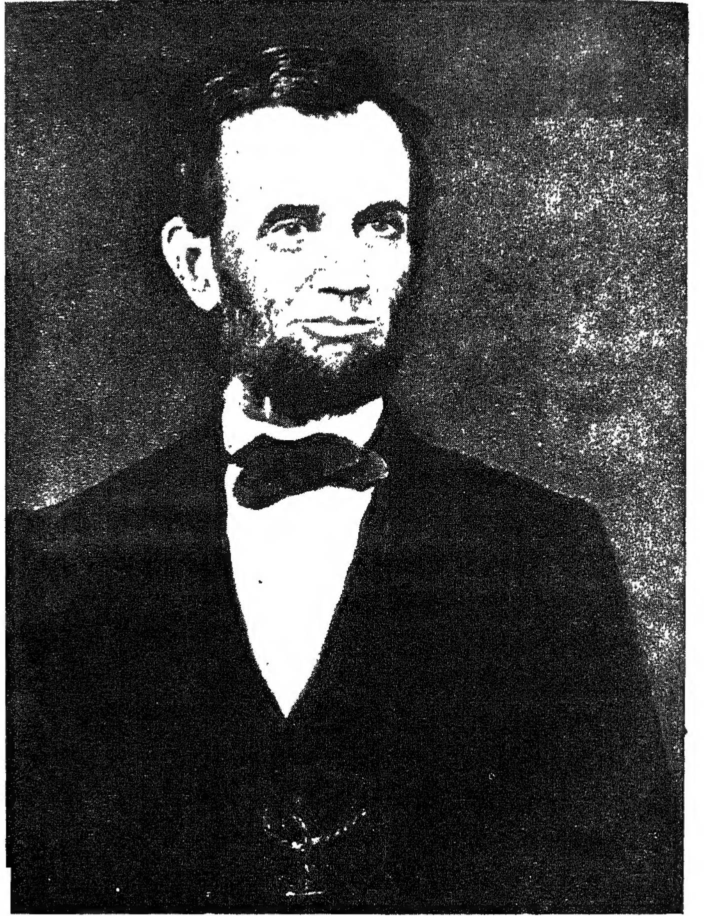
Whereas, on the twenty-second day of September, in the year of our Lord one thousand eight hundred and sixty-two, a proclamation was issued by the President of the United States, containing, among other things, the following, to wit:

"That on the first day of January, in the "year of our Lord one thousand eight hundred "and sixty-three, all persons held as slaves within "any State or designated part of a State, the people "whereof shall then be in rebellion against the "United States, shall be then, thenceforward, and "forever free; and the Executive Government of the "United States, including the military and naval "authority thereof, will recognize and maintain "the freedom of such persons, and will do no act "or acts to repress such persons, or any of them, "in any efforts they may make for their actual "freedom.

"That the Executive will, on the first day

दास-मुक्ति की घोषणा

जिस पर राष्ट्रपति लिंकन ने १ जनवरी १८६३ को हस्ताक्षर किये थे। इस घोषणा के अनुसार उस समय अमेरिकी संघ-शासन के प्रति विद्रोह-रत सभी राज्यों के सभी दास 'तत्काल और सदा के लिए' मुक्त कर दिये गये। वास्तविक मुक्ति तो उन्हें तभी मिली जब संघ-सेनाओं ने दक्षिणी राज्यों पर विजय पायी।



एब्राहम लिंकन
(आइजेनहावर द्वारा अंकित तैलचित्र)